[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3612

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

''साहित्य में रंग–राग''

डॉ. शोभना जोशी
शा. महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, किला भवन, इंदौर

सम्पूर्ण प्रकृति और मनुष्य समाज; संवेदनशील रचनाकार इन दोनों के बीच रहते हुए, इनसे अपने रिश्ते जोड़ता है, अनुभव लेता है। उसका अपना भावों और विचारों का, सपनों और कल्पनाओं का, आशा और आकांक्षाओं का, एक संसार निर्मित होता है, जो आंतरिक होता है। इसकी अभिव्यक्ति की प्रखर अभिलाषा के साथ वह कोई माध्यम सम्प्रेषण के लिये चुनता है। यह माध्यम चित्रकला, संगीतकला, मूर्तिकला, साहित्य कुछ भी हो सकता है। पर हर कला का माध्यम भिन्न होता है और हर माध्यम में अभिव्यक्ति की स्वायत्तता होती है। चित्र में रंग–रेखा आकार, संगीत में स्वर–ताल–लय, काव्य में शब्द–प्रतीक, मिथक, संकेत तो मूर्त्ति में आकार–गठन प्रधान है। पर इस सबके बावजूद भी कलाकार, रचनाकार व्यतिक्रम और अतिक्रम कर अपने ही माध्यम में रहते हुए भी किसी अन्य विधा की वीथियों से भी गुजरता है और अपनी कला को समृद्ध करता है।

साहित्य में शब्द चित्र होते हैं और चित्रकला में रंगचित्र। चित्रकला में रंग का आत्यंतिक महत्व है तो साहित्य में शब्द का। साहित्य शब्दों के जरिये रंगों का, कल्पनाओं, विचारों, भावों का संसार रचता है तो चित्रकला रंगों के जरिये। दोनों ही विधाओं में रंग अभिधेय, लाक्षणिक, व्यंग्यार्थ, प्रतीक एवं संकेतार्थ प्रकट करते हैं। चित्रकला में भी मूर्त्त–अमूर्त्त व्यंजना होती है और साहित्य में भी। जैसे– ख्यात चित्रकार पिकासो के चित्र अमूर्त्त है तो हिन्दी कहानी साहित्य के प्रसिद्ध नए कहानीकार निर्मल वर्मा की अमूर्त्त अभिव्यक्तियाँ चर्चित रही है।

इस विचार विवेचना के साथ साहित्य में ''रंग'' शब्द में निहित प्रतीकार्थ या विभिन्न रंगों के संयोजन के साथ रचना की अभिव्यंजना को देखने का लघु प्रयास इस शोध आलेख में है। साहित्य में ''रंग'' शब्द मात्र अपनी विशेष प्रयुक्ति के साथ अलग–अलग भावों के गहन अर्थ भर देता है। प्रेम, दुख, सुख, आशा, निराशा, उमंग, उल्लास, ज्ञान, अज्ञान आदि कई अर्थों की अनुगूंज ''रंग'' शब्द से होती है। रचनाकार अपने भावों–विचारों की संप्रेषणीयता को, ''रंग'' शब्द या विशेष रंग की अनुप्रयुक्ति कर गहराई और विस्तार देते हैं।

हिन्दी भाषा में एक मुहावरा है ''रंग में भंग करना'' इसका सीधा अर्थ है ''रंग अर्थात् सुख, उल्लास, उमंग'' ''भंग करना'' अर्थात् उसमें बाधा पैदा करना। निराला की ''अध्यात्म–फल'' कविता की पंक्तियां है – ''दीन का तो हीन ही यह वक्त है/''रंग करता भंग'' जो सुख संग का/ भेद से कर छेद पीता रक्त है/राज के सुख–साज–सौरभ अंग का।[1] यहाँ अन्य पंक्तियों के साथ ''रंग'' शब्द साधारण सुख उल्लास का प्रतीक भर नहीं है। अध्यात्म में (यहाँ अध्यात्म का वर्तमान में प्रचलित अर्थ न लिया जाय) जो स्वाधीनता है, सुख है, जो सौरभ की तरह कोमल है, उसे यह बुरा वक्त छलपूर्वक छेद कर भंग करता है। निस्संग मनुष्य के भाव संसार के ''रंग में भंग'' करता है। तो वही ''रंग खेलना'' मुहावरे के माध्यम से प्रेम क्रीड़ा का सहज–सुन्दर उल्लास अभिव्यक्त है – ''हेर प्यारे को सेज पास/नम्र मुख हँसी खिली/खेल रंग प्यारे के संग।[2] इसी तरह ''रंग भरना'' मुहावरे की प्रयुक्ति है जो गहन प्रेम क्रीड़ा को अभिव्यक्त करती है – ''आँख अधर रंग भर गये/पिचकारी चली लली के अंग–आंगन।[3] इसी तरह ''लज्जिता'' कविता की पंक्ति मैं विलास उपवन में आयी देख निराला रंग''[4] में ''निराला रंग'' अनूठी प्रेम क्रीड़ा को अभिव्यंजित करता है। मनुष्य ही नहीं पक्षियों का उल्लास भी अभिव्यक्त है – ''खुल गये डाल के फूल/रंग गये मुख विहग के।''[5] ''प्रेम के प्रति'' कविता में ''रंग में रंगना'' मुहावरे की प्रयुक्ति से शुद्ध दैहिक प्रेम को व्यक्त किया है –

''वसन–वासनाओं के रंग रंग/पहन सृष्टि ने ललचाया/समझे दोनों था– न कभी वह/प्रेम प्रेम की थी छाया।[6]

'पीले रंग' की प्रयुक्ति से निराला बसन्त ऋतु के आगमन की सूचना ही नहीं देते बल्कि बसंत ऋतु में मानव मन के उमड़ते भावों को भी अभिव्यक्त करते हैं– ''खुल गया–दिन खुली रात/विरह की बात गयी अब/पहले की पीली गात गयी अब।[7] तो वहीं ''आँखों में हरियाली लहरें [8]'' पंक्ति में हरा रंग सुखों की कामना का प्रतीक है। तो ''उद्बोधन'' कविता की ये पंक्तियाँ ''पीले पल्लव'' की प्रयुक्ति के साथ, पुराने को–निर्जीव को छोड़कर नये उमंग–उल्लास, नये विचार–भाव का आह्वान करती है। – उड़ा–उड़ाकर पीले पल्लव/करे सुकोमल राह–तरूण–तरू/भर प्रसून की प्यास।[9]

माया को वे कहते हैं –''तू किसी के चित्त की है कालिमा।[10] काला रंग हमारे यहाँ अज्ञान एवं बुराई का प्रतीक है। तो ''जड़ता'' का प्रतीक भी है – ''चिर कालिक कालिमा/जड़ता जीवन की चिर संचित दूर हुई।[11]

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

''नीले रंग को प्रयुक्ति के साथ निराला की सुंदर अभिव्यंजनाएँ हैं– जब वे कहते हैं ''तुम नभ हो मैं नीलिमा''[12] – तो नभ क्या है ? ''शून्य'', ''अगोचर'' उसकी पहचान पृथ्वी पर मात्र उसके नीलेपन से है जो नज़र आता है। तो वह प्रिय या अनंत, अगोचर जो दीखता नहीं, उसकी पहचान तो प्रिया या आराधक से है। एक दूसरी पंक्ति है ''किस अनंत का नीला आंचल हिला–हिला कर/आती हो तुम सजी मंडलाकार।''[13] इस पंक्ति की साधारण व्याख्या है अनंत आकाश जो प्रतिबिंबित है जल में लहरें समूह से उसे हिलाती हुई आती है। पर यह प्रतिबिंब नीला है, अनंत का है, उसे स्पर्श नहीं कर सकते पर उसका नीलापन दृश्यमान लहरों में उतर आया है जिन्हें छू सकते हैं। वे ''अनंत नीले'' को भासित कराती है। ''नीलिमा'', ''नीला रंग'', निराला के यहाँ अनंत का, सत्य का, शुभ्रता का प्रतीक है। ''जागरण'' कविता की पंक्ति है ''नग्न नीलिमा सी व्यक्त/भाषा सुरक्षित वह वेदों में आज भी[14]'' तो ''वसंत समीर'' कविता में गहरी आध्यात्मिक अभिव्यक्ति ''नीलिमा'' से है – ''वहाँ कहाँ कोई अपना ? सब/सत्य नीलिमा में लयमान।[15]'' वे अपनी ''कविता'' के लिये कहते हैं – ''शिलाखण्ड पर बैठी वह/ नीलांचल मृदु लहराता था।''[16]

'रंग' शब्द मात्र से निराला नश्वर संसार की अमरता कहाँ है व्यक्त कर देते हैं – ''मृत्यु की बाधाएँ बहुद्वन्द्व/पार कर–कर जाते स्वच्छंद/तरंगों में भर अगणित रंग/जंग जीते मर हुए अमर।''[17] जीवन मृत्यु के चक्र की सुंदर अभिव्यक्ति भी इसी तरह की है – ''झुकता है सर/दुनिया से धोखा खाकर/गिरता हूँ जब/ मुझे उठा लेते हो तुम तब/ज्यों पानी को किरन तपाकर/फिर दुनिया की आँखों से मुझकों ओझलकर/रखते आसमान पर/ बादल मुझको बनाते/रंग किरणों से भरते हो सुंदर।''[18] ये रंग किरण इन्द्रधनुष है बहुरंगी। इसी भाव के साथ ''प्याला'' कविता की पंक्तियां है – ''मृत्यु की बाधाएँ, बहुद्वन्द्व/पार कर जाते स्वच्छंद/तरंगों में भर अगणित रंग/जंग जीते मर अमर हुए।[19]'' जीवन की तरंगों में कर्म के अगणित रंग भरते हुए।

निराश–अकर्मण्य जन के लिए वे प्रार्थना करते हैं – रंग–रंग से यह गागर भर दो/निष्प्राणों को रसमय कर दो।[20] यहाँ भी ''रंग शब्द के गहन अर्थ हैं। जहां अनेक रंग के कर्मों, उमंग–उल्लास की बात है।''

महाप्राण निराला के ''रंग'' शब्द मात्र की प्रयुक्ति से जीवन के भिन्न भावों– विचारों की अभिव्यक्ति सहज–सप्राण हो गयी है, तो कहीं रंग विशेष का उल्लेख भी है। पर 'रंग' शब्द कहाँ, कौनसा अर्थ अभिव्यंजित कर रहा है इसकी पहचान, भारतीय संस्कृति में रंगों के प्रतीकार्थ के परिचय से ही संभव है।

संदर्भ –

1 *निराला रचनावली 1, 2 राजकमल प्रकाशन पेपर बैंक संस्करण II 1998*
2 *अध्यात्म फल – निराला रचनावली –1 पृ. 40*
3 *जूही की कली – निराला रचनावली –1 पृ. 42*
4 *205 – निराला रचनावली –2 पृ. 453*
5 *लज्जिता – निराला रचनावली –1 पृ. 65*
6 *नाथ तुमने महाहाथ – निराला रचनावली –2 पृ. 128*
7 *प्रेम के प्रति – निराला रचनावली – 1 पृ. 225*
8 *खुल गया दिन खुली रात – निराला रचनावली –2 पृ. 143*
9 *अति सुकृत भरे – निराला रचनावली –2 पृ. 172*
10 *उद्‌बोधन – निराला रचनावली –1 पृ. 104*
11 *माया – निराला रचनावली –1 पृ. 42*
12 *रेखा – निराला रचनावली – 7 पृ. 171*
13 *तुम और मैं – निराला रचनावली –1 पृ. 50*
14 *तरंगों के प्रति – निराला रचनावली – 1 पृ. 105*
15 *जागरण – निराला रचनावली – 1 पृ. 185*
16 *वसंत समीर – निराला रचनावली – 1 पृ. 192*
17 *कविता – निराला रचनावली – 1 पृ. 75*
18 *प्याला – निराला रचनावली – 1 पृ. 138*
19 *तुम और मैं – निराला रचनावली – 2 पृ. 43*
20 *प्याला – निराला रचनावली – 1 पृ. 138*
21 *128 – निराला रचनावली – 2 पृ. 414*